भाषा और साक्षरता

TESS India

भाषा-समृद्ध कक्षा

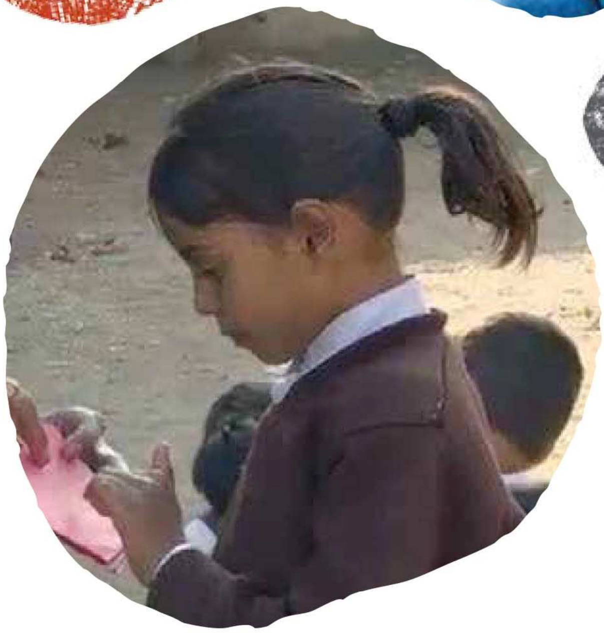

भारत में विद्यालय आधारित समर्थन के माध्यम से शिक्षक शिक्षा

www.TESS-India.edu.in

The Open University

UKaid from the British people

CC BY SA
http://creativecommons.org/licenses/

TESS-India (स्कूल-आधारित समर्थन के ज़रिए अध्यापकों की शिक्षा) का उद्देश्य है विद्यार्थी-केंद्रित, सहभागी दृष्टिकोणों के विकास में शिक्षकों की सहायता के लिए मुक्त शिक्षा संसाधनों (OER) के प्रावधानों के माध्यम से भारत में प्रारंभिक और माध्यमिक शिक्षकों की कक्षा परिपाटियों में सुधार लाना। TESS-India OER शिक्षकों को स्कूल की पाठ्यपुस्तक के लिए सहायक पुस्तिका प्रदान करते हैं। वे शिक्षकों के लिए अपनी कक्षाओं में अपने विद्यार्थियों के साथ प्रयोग करने के लिए गतिविधियाँ प्रदान करते हैं, जिनमें यह दर्शाने वाले वृत्त-अध्ययन भी शामिल रहते हैं कि अन्य शिक्षकों द्वारा उस विषय को कैसे पढ़ाया गया, और उनमें शिक्षकों के लिए अपनी पाठ योजनाएँ तैयार करने के लिए तथा विषय संबंधी ज्ञान के विकास में सहायक संसाधन भी जुड़े रहते हैं।

TESS-India OER को भारतीय पाठ्यक्रम और संदर्भों के अनुकूल भारतीय तथा अंतर्राष्ट्रीय लेखकों के सहयोग से तैयार किया गया है और ये ऑनलाइन तथा प्रिंट उपयोग के लिए उपलब्ध हैं (http://www.tess-india.edu.in)। OER भाग लेने वाले प्रत्येक भारतीय राज्य के लिए उपयुक्त, कई संस्करणों में उपलब्ध हैं और उपयोगकर्ताओं को इन्हें अपनाने तथा अपनी स्थानीय जरूरतों एवं संदर्भों की पूर्ति के लिए उनका अनुकूलन करने के लिए और स्थानीयकरण करने के लिए आमंत्रित किया जाता है।

TESS-India मुक्त विश्वविद्यालय, ब्रिटेन के नेतृत्व में तथा ब्रिटेन की सरकार द्वारा वित्त-पोषित है।

वीडियो संसाधन

इस इकाई में कुछ गतिविधियों के साथ निम्नलिखित आइकॉन दिया गया है: 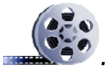. यह दर्शाता है कि आपको विशिष्ट शैक्षणिक थीम के लिए TESS-India के वीडियो संसाधनों को देखने में इससे मदद मिलेगी।

TESS-India के वीडियो संसाधन भारत में विभिन्न प्रकार की कक्षाओं के संदर्भ में प्रमुख शैक्षणिक तकनीकों का सचित्र वर्णन करते हैं। हमें उम्मीद है कि वे आपको इसी तरह के अभ्यासों के साथ प्रयोग करने के लिए प्रेरित करेंगे। इन्हें पाठ-आधारित इकाइयों के माध्यम से आपके कार्य अनुभव में इज़ाफ़ा करने और बढ़ाने के लिए रखा गया है, लेकिन अगर आप उन तक पहुँच बनाने में असमर्थ रहते हैं तो बता दें कि वे उनके साथ एकीकृत नहीं हैं।

TESS-India के वीडियो संसाधनों को TESS-India की वेबसाइट (http://www.tess-india.edu.in/) पर ऑनलाइन देखा सकता है या डाउनलोड किया जा सकता है। विकल्प के तौर पर, आप इन वीडियो तक सीडी या मेमोरी कार्ड द्वारा भी पहुँच बना सकते हैं।

संस्करण 2.0 LL02v1
Uttar Pradesh

तृतीय पक्षों की सामग्रियों और अन्यथा कथित को छोड़कर, यह सामग्री क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन-शेयरएलाइक लाइसेंस के अंतर्गत उपलब्ध कराई गई है: http://creativecommons.org/licenses/by-sa/3.0/
TESS-India is led by The Open University UK and funded by UK aid from the UK government

यह इकाई किस बारे में है

इस इकाई में आप एक कल्पनाशील, भाषा-समृद्ध कक्षा बनाने के सरल परन्तु प्रभावी तरीकों के बारे में जानेंगे, ताकि स्कूली परिवेश में स्वाभाविक बातचीत और लेखन के अलग अलग स्वरूपों के साथ आपके विद्यार्थियों का संपर्क बढ़ सके।

आपका परिचय ऐसे तरीकों से करवाया जाएगा, जिनके द्वारा आप स्कूल के बाहर के मौखिक व लिखित संसाधनों से अपने विद्यार्थियों को परिचित करवा सकते हैं, अपनी कक्षा की दीवारों पर पाठ्यांशों का उपयोग कर सकते हैं। आपको ऐसे व्यावहारिक, किफायती सुझाव भी दिए जाएंगे, जिनके द्वारा आप अपने विद्यार्थियों के लिए एक आनंददायक पठन कोना (Reading Corner) बना सकते हैं।

आप इस इकाई में क्या सीख सकते हैं

- कक्षा में प्रदर्शन योग्य आकर्षक लेखन-आधारित सामग्री कैसे बनाएं।
- अपने विद्यार्थियों के लिए एक रीडिंग कॉर्नर कैसे तैयार करें।
- कक्षा में बोली जाने वाली भाषा के स्रोत के रूप में रेडियो का उपयोग कैसे करें।

यह दृष्टिकोण क्यों महत्वपूर्ण है

पारंपरिक कक्षाओं में, शिक्षक ही मौखिक भाषा के मुख्य स्रोत होते हैं और पाठ्यपुस्तकें लिखित भाषा की मुख्य स्रोत होती हैं। समय की कमी और सीमित संसाधनों के कारण इनमें और विकल्पों को जोड़ने का प्रयास नहीं किया जाता।

स्वाभाविक बोलचाल और लेखन के विभिन्न स्रोतों का संपर्क और उपयोग विद्यार्थियों की भाषा और साक्षरता के विकास में अत्यधिक लाभकारी होता है। अपने विद्यार्थियों की जानकारी को मौखिक और लिखित संवाद के विभिन्न सार्थक उदाहरणों द्वारा समृद्ध बनाकर आप उनकी कल्पनाशीलता को प्रोत्साहन देंगे और साथ ही कई तरह के विषयों के बारे में शब्दों और वाक्यांशों की उनकी समझ और रचना भी बढ़ाएंगे। यदि आप अपने विद्यार्थियों की घर की भाषा के उदाहरणों को कक्षा में शामिल करते हैं, तो आप यह दर्शाते हैं कि उनके अतिरिक्त भाषायी कौशलों को महत्व दिया जाता है इससे उनके सहपाठियों को उनसे जुड़ी अलग अलग संस्कृतियों और परंपराओं की प्रशंसा करने का अवसर मिलेगा। इस प्रकार एक भाषा-समृद्ध कक्षा बनाने से आपके सभी विद्यार्थियों की शिक्षा पर एक सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

इस इकाई में ऐसे कई तरीके सुझाए गए हैं, जिनके द्वारा आप अपनी कक्षा को अधिक भाषा-समृद्ध बनाने की शुरुआत कर सकते हैं।

1 स्थानीय परिवेश में लेखन के उदाहरण

स्कूल प्रारम्भ करने से बहुत पहले से ही विद्यार्थियों का परिचय लिखित भाषा के कई उदाहरणों के साथ हो जाता है - जैसे गाड़ियों पर, दुकानों के बोर्ड पर, मार्ग दिशाओं के बोर्ड पर, खाद्य पदार्थों के लेबल, विज्ञापन, पोस्टर, ब्रांड नाम, राजनैतिक नारे और दीवारों पर बने चित्र, पत्रकों में, किताबों में, अखबारों में और पत्रिकाओं में। निम्नलिखित गतिविधि में कक्षा में एक सरल पठन और चर्चा गतिविधि के आधार के रूप में स्थानीय परिवेश से लेखन के परिचित स्वरूपों के उदाहरण इकट्ठा करना शामिल है। यह ख़ास तौर पर छोटी उम्र के विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त है।

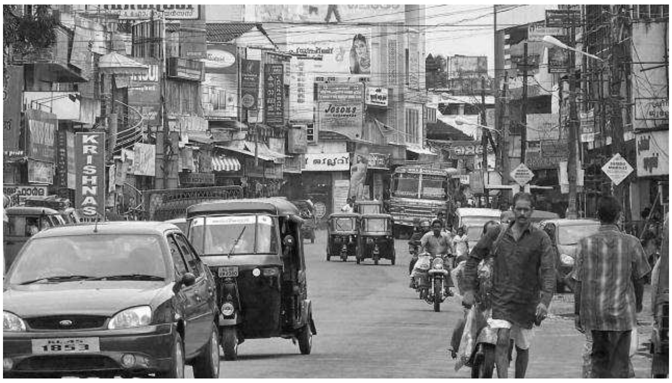

चित्र 1 परिवेशी प्रिंट की सर्वव्यापकता दर्शाता सड़क का चित्र

गतिविधि 1: अपनी कक्षा में परिवेशी लेखन का उपयोग करना

अपने स्थानीय परिवेश में ऐसे लेखनों की एक सूची बनाएँ, जिनसे आपके विद्यार्थी परिचित हैं या जिन्हें वे रोचक मानते हैं। घरों में, कार्यस्थल तक आपकी यात्रा में, और स्कूल के मैदानों में इसके उदारहण ढूंढें। आपने जो शब्द या वाक्यांश एकत्र किए हैं, उन्हें कागज़ की पट्टियों पर बड़े अक्षरों में लिखें और मोड़कर रख दें।

सबसे पहले अपने विद्यार्थियों को समझाएँ कि आपने क्या इकट्ठा किया है। उनकी जोड़ियाँ बनाएँ और पट्टियां वितरित करें। आप यादृच्छिक (random) रूप से ऐसा कर सकते हैं, जिसके लिए आप विद्यार्थियों की जोड़ियों को कंटेनर से एक पट्टी उठाने को कह सकते हैं, या आप चयनात्मक रूप से ऐसा कर सकते हैं, जिसमें आप अपने विद्यार्थियों की क्षमता के अनुसार उन्हें पट्टियां आवंटित करेंगे।

जोड़ियों को अपनी–अपनी पट्टियों को खोलने और उठाकर प्रदर्शित करने को कहें, ताकि उनके सहपाठी उसे देख सकें और पढ़कर सुना सकें कि उन पर क्या लिखा हुआ है। हर मामले में, इस बात पर संक्षिप्त चर्चा करें कि यह लेखन कहाँ कहाँ लिखा हुआ मिल सकता है। कुछ शब्दों और अभिव्यक्तियों के लिए आपके द्वारा समझाने या और जानकारी देने की आवश्यकता पड़ सकती है।

अपने प्रत्येक विद्यार्थी को एक खाली कागज़ दें और उनसे कहें कि अगले एक सप्ताह तक वे घर और स्कूल के रास्ते में, अपने घर में या अपने आस-पड़ोस में नए शब्दों या वाक्यांशों को ढूंढें। इनका उपयोग इसी तरह की किसी युग्म गतिविधि के लिए करें या उन्हें दीवार पर प्रदर्शित करें, ताकि अन्य विद्यार्थी उन्हें पढ़ सकें और उनके बारे में बात कर सकें।

अपने विद्यार्थियों से कक्षा में ऐसी सभी मुद्रित सामग्री लाने को कहें, जो उन्हें उनके घर में या गाँव में मिल जाए, जिसका अब उपयोग नहीं किया जा रहा हो और इससे एक वॉल डिस्प्ले बनाएँ।

यदि आपके पास एक कैमरा और प्रिंटर उपलब्ध है, तो आप परिवेशी लेखनों के उदाहरणों के क्लोज़-अप चित्र ले सकते हैं और इनकी प्रतियाँ मुद्रित करके उनका वितरण या प्रदर्शन कर सकते हैं।

विचार के लिए रुकें

- क्या आप इन गतिविधियों का उपयोग अपने विद्यार्थियों के मूल्यांकन के लिए कर सकते हैं?
- आप ज्यादा उन्नत विद्यार्थियों के लिए इस गतिविधि को कैसे अनुकूलित कर सकते हैं?

2 कक्षा में लेखन के उदाहरण

कक्षा में आपके विद्यार्थियों के पढ़ने के लिए लेखन के कई उदाहरण मौजूद हो सकते हैं। ऐसा लेखन ब्लैकबोर्ड पर, साइन बोर्ड और नोटिस बोर्ड पर, चार्ट, पोस्टर और लेबलों पर, तथा आपके विद्यार्थियों के कार्य के डिस्प्ले (प्रदर्शन) में हो सकता है।

केस स्टडी 1: कक्षा में लेखन से सीखना

इलाहाबाद में कक्षा एक की शिक्षिका सुश्री श्रुति अपने विद्यार्थियों के लिए एक लेखन-समृद्ध कक्षा बनाने के बारे में अपना तरीका बताती हैं।

मैं जानती हूँ कि मेरे छोटे विद्यार्थियों को कक्षा में सुनने और बोलने के कई मौकों की ज़रुरत है। हालांकि उनमें से ज्यादातर अभी पढ़ या लिख नहीं सकते, लेकिन मैं इस बात को समझती हूँ कि टेक्स्ट के अलग अलग उदाहरणों से उनका परिचय करवाना कितना महत्वपूर्ण है, चाहे वह हस्तलिखित पाठ हो या मुद्रित।

मेरे पास रंगीन पोस्टरों का एक संग्रह है, जिसमें वर्णमाला और शब्द चार्ट आदि हैं। इन्हें मैं दीवार पर बच्चों की दृष्टि की सीध में रखती हूँ।

मैं हर बच्चे के नाम के लेबल बनाती हूँ, जिस पर मैं उन्हें चित्र बनाने को कहती हूँ। मैं इन्हें दीवार पर हुक के साथ वहाँ लगाती हूँ, मेरे पास कार्ड बोर्ड से बना नाम वाले कार्डों का भी एक सेट है, जिन्हें मोड़कर रखा गया है। जिसे मैं वहां रखती हूँ, जहाँ मैं कुछ विशिष्ट गतिविधियों के लिए विद्यार्थियों को जोड़ियों में या छोटे समूहों में बिठाना चाहती हूँ। ये लेबल मेरे विद्यार्थियों को लिखे हुए अपने नाम और सहपाठियों के नामों को पहचानने में उनकी मदद करने में उपयोगी हैं।

रंगीन कागज़ का उपयोग करके, मैं कक्षा की अलग अलग विशेषताओं के लिए भी लेबल बनाती हूँ। इनमें ‘दरवाज़ा’, ‘खिड़की’, ‘ब्लैकबोर्ड’, ‘आलमारी’, ‘टेबल’, ‘कुर्सी’, ‘डेस्क’, और ‘घड़ी’ जैसे शब्द शामिल हैं।

मैं प्रत्येक वस्तु पर सही लेबल लगाने में अपने विद्यार्थियों की मदद मांगती हूँ। सबसे पहले मैं अक्षरों और मात्राओं पर ध्यान देते हुए ऊँची आवाज़ में शब्द पढ़कर सुनाती हूँ। फिर मेरे विद्यार्थी इशारा करते हैं कि वह लेबल कहाँ लगना चाहिए। कभी-कभी मेरे विद्यार्थी कक्षा की किसी अन्य वस्तु पर लेबल लगाने का सुझाव देते हैं। ऐसे में, मैं उनके सुझावों को लिखते समय अक्षरों के नाम बोलती हूँ।

कक्षा के एक हिस्से में मैंने वर्ड वॉल (शब्द दीवार) बनाई है। यहाँ मैं उन नए शब्दों को लिखती हूँ, जिनसे मेरे विद्यार्थियों का उस सप्ताह के दौरान परिचय हुआ है। मैं अपने विद्यार्थियों को खुद भी ये शब्द लिखने के लिए प्रोत्साहित करती हूँ।

चित्र 2 एक भाषा-समृद्ध कक्षा का उदाहरण।

विचार के लिए रुकें

- सुश्री श्रुति के विचार किस प्रकार उनके विद्यार्थियों की भाषा और साक्षरता के विकास में योगदान कर रहे हैं?
- आप उनके किन विचारों को अपनी कक्षा में लागू कर सकते हैं?

गतिविधि 2: एक लेखन.समृद्ध कक्षा बनाना

15 मिनट का समय उन तरीकों पर ध्यान देने के लिए अलग रखें, जिनके द्वारा वर्तमान में आपकी कक्षा में लेखन प्रदर्शित होता है:

- यह किस रूप में है?
- क्या यह आपके विद्यार्थियों के लिए प्रेरणादायी है? यह उनके शिक्षण में किस तरह योगदान करता है?
- इसे कितने अंतराल पर बदला जाता है?
- यदि इसमें आपके विद्यार्थियों का काम शामिल है, तो प्रदर्शित अंश कितना समावेशी होता है?

अपने दो सहकर्मियों से बात करें। उनकी कक्षा की दीवारों पर लेखन के कौन-से उदाहरण दिखाई देते हैं?

आप अपनी कक्षा में विद्यार्थियों का जो कार्य प्रदर्शित करते हैं, उसमें किस प्रकार वृद्धि व विविधता ला सकते हैं? आप अपने विद्यार्थियों के लिए रोचक, एवं आयु के उपयुक्त पठन सामग्री देने के लिए खुद के लेखन का किस प्रकार कल्पनाशीलता से उपयोग कर सकते हैं? अपनी कक्षा की दीवारों के उपलब्ध स्थान को ध्यान में रखते हुए एक योजना बनाएँ और सोचें कि आप अधिक प्रभावी रूप से इसका उपयोग कैसे कर सकते हैं। यह संकल्प करें कि यदि संभव हुआ, तो आप हर पंद्रह दिनों में अपनी कक्षा में नए डिस्प्ले जोड़ेंगे या मौजूदा डिस्प्ले में से कुछ को बदलेंगे। अपने सहकर्मियों को भी ऐसा करने का प्रोत्साहन दें। नियमित रूप से एक दूसरे की कक्षाओं में जाकर एक दूसरे के वॉल प्रदर्शनों को देखें और उनसे सीखें।

3 कक्षा का रीडिंग कॉर्नर

अपनी कक्षा में एक रीडिंग कॉर्नर बनाने से आपके विद्यार्थियों को एक ख़ास जगह मिलती है, जहाँ वे अपनी किताबें रख सकते हैं और उनकी सामग्री को अपने आप से देख सकते हैं।

कक्षा के रीडिंग कॉर्नर को बनाने और उसमें संसाधनों की व्यवस्था करने में विद्यार्थियों को शामिल करना महत्वपूर्ण है। इस तरह वे भी इसका उपयोग करना चाहेंगे और इसमें सुधार करना चाहेंगे।

चित्र 3 कक्षा का पठन कोना।

केस स्टडी 2: कक्षा के रीडिंग कॉर्नर के लिए संसाधन जुटाना

श्री दिलीप उत्तर प्रदेश में एक प्राथमिक विद्यालय में कक्षा तीन को पढ़ाते हैं। यहाँ वे बता रहे हैं कि उन्होंने किस तरह अपनी कक्षा के रीडिंग कॉर्नर के लिए कुछ किताबें इकट्ठी कीं।

मैं जानता हूँ कि छोटी उम्र से ही किताबों का उपयोग करने का मौका मिलना विद्यार्थियों के लिए कितना महत्वपूर्ण होता है। हालांकि मेरे विद्यार्थियों को अपनी पाठ्यपुस्तकें पढ़ने में भी मज़ा आता था, लेकिन मैं चाहता था कि उन्हें देखने और पढ़ने के लिए और भी सामग्री मिले। हालांकि नई पुस्तकें खरीदने के लिए बहुत ही कम राशि उपलब्ध थी।

मेरे जिन रिश्तेदारों और दोस्तों के बच्चे बड़ी उम्र के थे, सबसे पहले मैंने उनसे पूछा कि क्या उनके घरों में कोई ऐसी किताब है, जिसकी अब उनके बच्चों को ज़रुरत नहीं है। मैं शिक्षा के लिए दान देने वाली जिन संस्थाओं के बारे में जानता था, मैंने उन्हें पत्र लिखकर पूछा कि क्या वे किसी तरह इसमें योगदान कर सकते हैं। अंत में मैंने कुछ पुस्तकें खरीदने के लिए अपने वार्षिक TLM (शिक्षण अधिगम सामग्री) अनुदान का उपयोग किया।

मैंने केवल दस पुस्तकों के साथ अपने रीडिंग कॉर्नर की शुरुआत की थी। दो वर्षों में ही मैंने कथाओं और साहित्य की लगभग 60 पुस्तकों का संग्रह बना लिया, जो विभिन्न स्तरों के लिए उपयुक्त थीं। मेरे पास कई तरह की पत्रिकाएँ और अखबार भी हैं। मैं अब स्कूल के अन्य शिक्षकों को भी ये देता हूँ।

गतिविधि 3: अपनी कक्षा में एक रीडिंग कॉर्नर शामिल करना

यदि संभव हो, तो एक सहकर्मी के साथ काम करके, अपनी कक्षा में एक रीडिंग कॉर्नर के लिए योजना बनाएँ और आपके मन में आने वाले सभी विचारों को लिख लें। निम्नलिखित पर विचार करें:

- आपके पास उपयुक्त पुस्तकें और पठन सामग्री प्राप्त करने के कौन-से साधन उपलब्ध हैं?
- आपके विद्यार्थी किस तरह सामग्री की आपूर्ति में योगदान कर सकते हैं (उदहारण के लिए, खुद ही पुस्तकें तैयार करके)?
- आप अपनी कक्षा में रीडिंग कॉर्नर कहाँ बना सकते हैं?
- इसे सेट करने के लिए आपको किन चीजों की आवश्यकता है (उदाहरण के लिए किताबें रखने के लिए बक्से, बैठने के लिए दरी आदि)? आप इन चीजों को कहाँ रख सकते हैं?

- आप अपनी कक्षा की गतिविधियों में रीडिंग कॉर्नर का उपयोग किस तरह शामिल करेंगे?

संसाधन 1 में कुछ उपयोगी विचार दिए गए हैं, जो अपनी कक्षा में रीडिंग कॉर्नर तैयार करने में आपकी मदद करते हैं।

कक्षा के एक संसाधन के रूप में रेडियो

केस स्टडी 3: भाषा और साक्षरता के विकास के लिए रेडियो का उपयोग करना

श्रीमती रेखा उत्तर प्रदेश के एक प्राथमिक विद्यालय में मल्टी-ग्रेड शिक्षिका हैं। यहाँ वे बता रही हैं कि अपने भाषा पाठों में वे किस तरह एक संसाधन के रूप में रेडियो का उपयोग करती हैं।

मेरे विद्यालय में उपलब्ध पाठ्यपुस्तकों के अलावा बहुत ही कम संसाधन हैं। मैं अपने खाली समय में अक्सर रेडियो सुनती हूँ और मुझे पता चला है कि इसमें कई रोचक कार्यक्रम आते हैं। अब मैं नियमित रूप से रेडियो का उपयोग विद्यार्थियों के भाषा पाठों में इनपुट के एक अतिरिक्त स्रोत के रूप में करती हूँ। वह जिस तरह से बच्चों को कक्षा के बाहर की दुनिया से परिचित कराने में मेरी सहायता करता है यह मुझे अच्छा लगता है।

मैं शामिल किए जा रहे विषयों के आधार पर उपयुक्त कार्यक्रमों का चयन करने के लिए समाचार पत्र में दी गई रेडियो प्रोग्राम गाइड को देखती हूँ। मैं कक्षा में कार्यक्रमों का सीधा प्रसारण करना चाहती थी, इसलिए यह सुनिश्चित करना आवश्यक था कि इनका समय उपयुक्त हो, लेकिन अब मेरे पास रिकॉर्डिंग सुविधा वाला एक रेडियो है, इसलिए मैं पहले से ही उन्हें चुन सकती हूँ और बाद में चला सकती हूँ।

अक्सर मैं अपने विद्यार्थियों को खासतौर पर तैयार किए गए शिक्षाप्रद कार्यक्रम सुनाती हूँ, क्योंकि ये स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किए जाते हैं और इनमें एक या दो संक्षिप्त कार्य अथवा अन्य गतिविधियाँ होती हैं। कार्यक्रमों के बाद हम हमेशा उसकी विषय वस्तु के बारे में बात करने में समय बिताते हैं। यदि कोई बात समझ नहीं आई थी, तो इससे उसे समझने में मदद मिलती है। कभी-कभी पूरी कक्षा इसमें एक साथ भाग लेती है। कभी-कभी मैं अपने विद्यार्थियों के समूह बनाती हूँ और उनसे कहती हूँ कि वे साथ बैठकर कार्यक्रम के बारे में चर्चा करें। मैं अक्सर इन चर्चाओं के बाद अपने छोटे विद्यार्थियों को कार्यक्रम की विषय सामग्री के बारे में संक्षेप में कुछ लिखने को कहती हूँ और अपने बड़े विद्यार्थियों को एक लंबी रिपोर्ट तैयार करने को कहती हूँ।

मैं कक्षा में कहानियों, नाटकों और धारावाहिकों का प्रसारण भी करती हूँ। इसके बाद उनके पात्रों, उनमें उठाए गए मुद्दों, या आगे क्या होगा, इस बारे में चर्चा होने लगती है। कभी कभी मैं अपने विद्यार्थियों को आमंत्रित करती हूँ कि वे अपने शब्दों में इसके संवाद लिखें और रोल प्ले के रूप में प्रस्तुत करें।

मुझे यह अच्छा लगता है कि किस तरह रेडियो कार्यक्रम अलग अलग आवाजों, नई अभिव्यक्तियों और भाषा के अलग अलग रजिस्टरों से मेरे विद्यार्थियों का परिचय करवाते हैं। कार्यक्रमों के दौरान अपरिचित लगने वाले शब्दों को मैं लिख लेती हूँ और बाद में अपने विद्यार्थियों से पूछती हूँ कि क्या उन्हें वे शब्द मालूम हैं या क्या वे उनका अर्थ बता सकते हैं। कभी कभी वे सुनी गई भाषा पर टिप्पणी करते हुए कहते हैं कि प्रस्तुतकर्ता ने किसी शब्द का उच्चारण इस लहजे में किया या अमुक शब्द अथवा अभिव्यक्ति का उपयोग किया, जबकि इसके बजाय एक वैकल्पिक शब्द का उपयोग किया जा सकता था। इन अंतरों पर चर्चा करने से भाषा की समृद्धि और विविधता के प्रति उन्हें जागरुक बनाने में मदद मिलती है।

मैंने अपने विद्यार्थियों की घर की भाषा में भी कार्यक्रम के एक छोटे अनुभाग के प्रसारण का प्रयोग किया है। जो विद्यार्थी इसे समझ सकते थे, उनसे मैंने कहा कि वे अपने सहपाठियों को बताएँ कि वक्ता ने क्या कहा है। इसके बाद मैंने उनसे वक्ता द्वारा उपयोग किए गए दो या तीन मुख्य शब्दों को दोहराने को कहा और बाकी कक्षा को मौखिक रूप से उन्हें दोहराने के लिए आमंत्रित किया। उन्होंने परिचित शब्द बोर्ड पर लिखे जिनसे वे अपनी घर की भाषा में परिचित थे या जानते थे, और शेष कक्षा ने अपनी अभ्यास पुस्तिकाओं में उनकी नकल की। हर कोई इस पाठ में पूरी तरह खोया हुआ था।

मेरे विद्यार्थियों के लिए रेडियो प्रसारण का उपयोग करने से उन्हें हर समय मेरी ही आवाज़ सुनते रहने के बजाय एक पूरक विकल्प मिलता है।

विचार के लिए रुकें

- श्रीमती रेखा के रेडियो-आधारित पाठ उनके विद्यार्थियों को भाषा और साक्षरता के विकास के कौन-से अवसर देते हैं?
- क्या आपको लगता है कि कक्षा में रेडियो का उपयोग करने में कोई चुनौतियां हो सकती हैं? आप उनसे कैसे निपट सकते हैं?

मुख्य संसाधन ‘सभी को शामिल करना’ में इस बारे में अधिक विचार मिलते हैं कि कक्षा में किस तरह विद्यार्थियों की घर की भाषा को महत्व देकर उनकी सहभागिता बढ़ाई जा सकती है।

वीडियो: सभी को शामिल करना

गतिविधि 4: कक्षा में रेडियो का उपयोग करना

कक्षा में रेडियो कार्यक्रमों का उपयोग करने से पहले भाषा और साक्षरता के विकास में उनके उपयोग का अभ्यास करना फायदेमंद होता है।

चित्र 4 कक्षा में रेडियो सुनना।

लगभग एक सप्ताह की अवधि में, ऐसे दो या तीन रेडियो कार्यक्रम सुनने का समय निकालें, जो आपके अपने विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त लगते हों। इन्हें सुनते समय इस बारे में सोचें कि आप निम्नलिखित के सन्दर्भ में इनके प्रसारण से आपने विद्यार्थियों को क्या लाभ देना चाहते हैं:

- इसकी सामग्री के पहलू
- उनकी भाषा और साक्षरता का विकास।

इसके बाद, कल्पना करें कि आप कक्षा में हैं और ऊंची आवाज़ में बोलकर उस तरह के प्रश्नों और चर्चा बिन्दुओं का अभ्यास करें, जिन्हें शायद आप अपने विद्यार्थियों के विषय ज्ञान और भाषा व साक्षरता के स्तर को ध्यान में रखते हुए उनसे प्रसारण के बाद पूछना चाहेंगे।

ऐसी एक या दो गतिविधियाँ रेखांकित करें, जो आपके विद्यार्थी प्रसारण के बाद प्रस्तुत कर सकते हैं। इनमें बोलना या लिखना अथवा दोनों का मिश्रण शामिल हो सकता है। इस बारे में सोचें कि आप अपने विद्यार्थियों को किस प्रकार व्यवस्थित करेंगे, इसमें उन्हें कितना समय लगेगा और आप किस तरह अंत में कक्षा को एक साथ लाएँगे।

जब आप इस कौशल को कई बार दोहरा लें, तो एक कार्यक्रम चुनें, जिसका सीधा प्रसारण किया जा सकता हो, या जिसे रिकॉर्ड करके बाद में आपके विद्यार्थियों के लिए चलाया जा सकता हो। जितना संभव हो, इन पाठों की योजना पहले से ही बनाएँ। इसके बाद इसे आज़मा कर देखें।

विचार के लिए रुकें

- क्या पाठ आपकी उम्मीद के अनुसार हुआ?
- अगली बार आप अलग ढंग से क्या करेंगे?

एक भाषा-समृद्ध कक्षा बनाने के बारे में आगे के विचारों के लिए, संसाधन 2 'स्थानीय संसाधनों का उपयोग करना' को देखें।

वीडियो: स्थानीय संसाधनों का उपयोग

सारांश

इस इकाई में आपको कुछ सरल और किफायती तरीके बताए गए, जिनके द्वारा आप अपनी कक्षा को अधिक भाषा-समृद्ध बना सकते हैं। इसमें ऐसे विचारों का सुझाव दिया गया, जिनका उपयोग आप कक्षा में यह सुनिश्चित करने के लिए कर सकते हैं कि बोलने और लिखने के कई प्रकार के अलग अलग स्रोतों से

आपके विद्यार्थियों का परिचय होता है। इनमें लेखन-आधारित दीवार प्रदर्शन बनाने, आपके विद्यार्थियों के लिए एक रीडिंग कॉर्नर तैयार करने और कक्षा में रेडियो का उपयोग करने के सुझाव शामिल हैं। समय के साथ-साथ आप ऐसे सरल संसाधनों और गतिविधियों का सेट बना सकते हैं, जिनका उपयोग आप विभिन्न स्तरों वाले विद्यार्थियों के साथ पाठ्यपुस्तक के पाठों को विस्तार देने और अपने परिवेश में वे जिस लिखित और मौखिक भाषा के संपर्क में आते हैं, उससे जुड़ने की प्रेरणा में वृद्धि के लिए कर सकते हैं।

संसाधन

संसाधन 1: अपनी कक्षा में एक आकर्षक रीडिंग कॉर्नर बनाना

स्कूल की पाठ्यपुस्तकों की पूरक बन सकने वाली पठन सामग्री ढूंढना कठिन हो सकता है, फिर भी आप चाहेंगे कि हो सके, उतनी आप उपलब्ध करा पायें जिन्हें आपके विद्यार्थी पढ़ना चाहेंगे। यहाँ चार ऐसे शिक्षकों से प्राप्त विचार दिए गए हैं, जो अपने स्कूल में पुस्तक क्षेत्र और पुस्तकालय का विकास करते रहे हैं:

- रंगीन पत्रिकाओं से उपयुक्त टेक्स्ट काटें और उन्हें पुस्तकों या चार्ट पर चिपकाएँ।
- जहाँ उपयुक्त हो, वहाँ अभिभावकों, समुदाय के सदस्यों या स्कूल आने वाले मेहमानों से पुस्तकें और पत्रिकाएँ दान में मांगें।
- 'रूम टू रीड' और 'प्रथम' जैसे एन.जी.ओ. से संपर्क करें और दान में किताबें माँगें।
- पुस्तकें खरीदने के लिए अपने टी.एल.एम. भत्ते का उपयोग करें।

अब इस बारे में सोचें कि आप किस तरह एक प्रेरणादायक पठन परिवेश तैयार कर सकते हैं। यहाँ आपके लिए लिए कुछ शुरूआती विचार दिए गए हैं:

पठन संसाधन एकत्र करना

यथा संभव अधिकाधिक पठन सामग्री इकट्ठा करें, ताकि आपका संग्रह धीरे-धीरे बदलता और बढ़ता रहे। सुनिश्चित करें कि आपका संग्रह पठन क्षमता के विभिन्न स्तरों को आकर्षित करता हो। उपलब्ध पुस्तकों में विभिन्न विषय शामिल करें, जैसे:

- कहानियों की किताबें
- खेलों, प्रकृति, वस्तुएँ बनाने आदि के बारे में तथ्यात्मक पुस्तकें।
- शब्दकोश और एटलस
- कविताएँ
- चुटकुलों और पहेलियों की किताबें
- यदि संभव हो, तो आपके विद्यार्थियों की घर की भाषाओं में पुस्तकें।

अपने संग्रह में जोड़ने के लिए अख़बार, पत्रिकाएँ और कॉमिक्स इकट्ठा करें। आपके विद्यार्थियों को अपने समुदायों से उपयुक्त पठन सामग्रियाँ ढूँढने के लिए प्रेरित करें।

पुस्तकें बनाना

आपके विद्यार्थी अपनी खुद की कविताओं या लघुकथाओं वाली पुस्तक बना सकते हैं। उनके पाठ जिन विषयों पर आधारित हैं, वे उनके विषय में कोई पुस्तक विकसित कर सकते है। अथवा उन पर आधारित लघु नाटिका लिख सकते हैं। वे अपनी पुस्तक के लिए एक कवर डिज़ाइन कर सकते हैं, जो दूसरों को उस पुस्तक को पढ़ने के लिए आकर्षित करे।

विशेष प्रदर्शन

किसी विशेष थीम, (उदाहरण के लिए पानी या परिवहन), पर आधारित प्रदर्शन (डिस्प्ले) रखने से जिज्ञासा और चर्चा को प्रोत्साहन मिलता है और यह विद्यार्थियों को स्वयं जानकारी हासिल करने को प्रेरित करने का एक अच्छा तरीका है। पुस्तक प्रदर्शन (डिस्प्ले) के साथ साथ पोस्टर, चित्र और फोटो भी दीवार पर लगाए जा सकते हैं। विद्यार्थियों की रुचि बनाए रखने के लिए, नियमित रूप से वॉल डिस्प्ले को बदलते रहने की कोशिश करें और इनमें ऐसी सामग्रियाँ शामिल करें, जो उन्होंने खुद तैयार की हों।

आपके पास जो पठन सामग्री उपलब्ध हैं, यदि आप उनके बारे में अच्छी तरह जानते हैं, तो आप अपने अपने विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करके उन्हें यह बता सकते हैं कि इनमें से किस सामग्री में उन्हें अपनी जिज्ञासाओं के उत्तर मिलेंगे।

एक रीडिंग कॉर्नर बनाना

अपनी कक्षा या स्कूल में एक पठन क्षेत्र या रीडिंग कॉर्नर बनाने के लिए स्थान की पहचान करें। यहाँ एक बड़ा साइनबोर्ड लगाएँ, ताकि इसका उद्देश्य स्पष्ट हो सके। अपने विद्यार्थियों के पढ़ने के लिए एक आकर्षक और आरामदायक स्थान बनाएँ। एक चटाई बिछाएँ या संभव हो तो कुर्सियां रखें।

पूछें कि क्या इकट्ठा की गई पठन सामग्री की देखभाल करने और इनका रिकॉर्ड रखने के लिए कोई विद्यार्थी लाइब्रेरियन के रूप में मदद करना चाहता हैं। पठन सामग्री चाहे दराजों में रखी हों या बक्सों में, लेकिन यह सुनिश्चित करें कि वे हर दिन प्रदर्शित की जाएं, ताकि विद्यार्थी उन तक आसानी से पहुँच सकें। नियमित रूप से अलग अलग विद्यार्थियों को उन्हें बाहर निकालने और ठीक ढंग से रखने के काम के लिए आमंत्रित करें। विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करें कि वे खराब या फटी किताबों की मरम्मत करने में आपकी मदद करें। आपके विद्यार्थियों की सहभागिता जितनी ज्यादा होगी उतना ही ज्यादा वे इस स्थान की और पढ़ने में इसके काम की ज़िम्मेदारी लेंगे।

संसाधन 2: स्थानीय संसाधनों का उपयोग करना

अध्यापन के लिए केवल पाठ्यपुस्तकों का ही नहीं – बल्कि अनेक शिक्षण संसाधनों का उपयोग किया जा सकता है। यदि आप सीखने के ऐसे तरीकों का इस्तेमाल करते हैं जिनमें विभिन्न ज्ञानेन्द्रियों (दृष्टि, श्रवण, स्पर्श, गंध) का उपयोग होता हो तो आप विद्यार्थियों की सीखने के अलग–अलग तरीकों से अच्छा तालमेल रख सकेंगे। आपके इर्दगिर्द ऐसे संसाधन उपलब्ध हैं जिनका उपयोग आप कक्षा में कर सकते हैं, और जिनसे आपके विद्यार्थियों को अधिगम में सहायता मिल सकती है। कोई भी स्कूल बिना लागत या जरा सी लागत से अपने स्वयं के शिक्षण संसाधनों को तैयार कर सकता है। इन सामग्रियों को स्थानीय स्तर पर प्राप्त करके, पाठ्यक्रम और आपके विद्यार्थियों के जीवन के बीच संबंध बनाए जा सकते हैं।

आपको अपने नजदीकी परिवेश में ऐसे लोग मिलेंगे जो विविध प्रकार के विषयों में पारंगत हैं; आपको कई प्रकार के प्राकृतिक संसाधन भी मिलेंगे। इनसे आपको स्थानीय समुदाय के साथ संबंध जोड़ने, उसके महत्व को दर्शाने, विद्यार्थियों को उनके पर्यावरण की प्रचुरता और विविधता को देखने के लिए प्रोत्साहित करने में सहायता मिलेगी, और संभवतः सबसे महत्वपूर्ण यह है कि इससे विद्यार्थी–अधिगम के प्रति एक समग्र दृष्टिकोण विकसित होने का मौका मिलता है, यानी जिसमें बच्चे स्कूल के भीतर और बाहर, दोनों जगह सीख रहे हों।

अपनी कक्षा का अधिकाधिक लाभ उठाना

लोग अपने घरों को यथासंभव आकर्षक बनाने के लिए कठिन मेहनत करते हैं। उस परिवेश के बारे में सोचना भी महत्वपूर्ण है जिसमें आप अपने बच्चों से सीखने करने की अपेक्षा करते हैं। आपकी कक्षा और स्कूल को पढ़ाई की एक आकर्षक जगह बनाने के लिए आप जो कुछ भी कर सकते हैं उसका आपके विद्यार्थियों पर सकारात्मक प्रभाव होगा। अपनी कक्षा को रोचक और आकर्षक बनाने के लिए आप बहुत कुछ कर सकते हैं – उदाहरण के लिए, आप:

- पुरानी पत्रिकाओं और पुस्तिकाओं से पोस्टर बना सकते हैं
- वर्तमान विषय से संबंधित वस्तुएं और शिल्पकृतियाँ ला सकते हैं
- अपने विद्यार्थियों के काम को प्रदर्शित कर सकते हैं
- बच्चों को उत्सुक बनाए रखने और नवीन अधिगम को प्रेरित करने के लिए कक्षा में प्रदर्शित चीजों को बदलते रहें।

अपनी कक्षा में स्थानीय विशेषज्ञों का उपयोग करना

यदि आप गणित में पैसे या परिमाणों पर काम कर रहे हैं, तो आप बाज़ार के व्यापारियों या दर्जियों को कक्षा में आमंत्रित कर सकते हैं और उन्हें यह समझाने को कह सकते हैं कि वे कैसे अपने काम में गणित का उपयोग करते हैं। वैकल्पिक रूप से, यदि आप कला के प्रकारों और आकृतियों का अध्ययन कर रहे हैं, तो आप विभिन्न आकृतियों, डिजाइनों, परंपराओं और तकनीकों का वर्णन करने के लिए मेहंदी [वैवाहिक मेहंदी] डिजायनरों को स्कूल में आमंत्रित कर सकते हैं। अतिथियों को आमंत्रित करना तब सबसे उपयोगी होता है जब हर एक व्यक्ति को यह स्पष्ट हो कि इस काम का सम्बन्ध शैक्षणिक लक्ष्यों की प्राप्ति से है और समयोचित अपेक्षाएं साझा की जा सकें।

आपके स्कूल के समुदाय के भीतर भी ऐसे विशेषज्ञ हो सकते हैं (जैसे रसोइया या केयर टेकर) जिनके साथ जाकर या जिनका साक्षात्कार लेकर विद्यार्थी कुछ सीख सकते हैं; उदाहरण के लिए, भोजन पकाने में प्रयुक्त परिमाणों का पता लगाना, या जानना कि मौसम की अवस्थाएं स्कूल के मैदानों और इमारतों को कैसे प्रभावित करती हैं।

बाह्य पर्यावरण का उपयोग करना

आपकी कक्षा के बाहर संसाधनों की एक विशाल श्रृंखला है जिनका उपयोग आप अपने पाठों में कर सकते हैं। आप पत्तों, मकड़ियों, पौधों, कीटों, पत्थरों या लकड़ी जैसी वस्तुओं को एकत्रित कर सकते हैं (या अपनी कक्षा से एकत्रित करने को कह सकते हैं)। इन संसाधनों को कक्षा में लाकर कक्षा में रोचक प्रदर्शन योग्य वस्तुएं बनाई जा सकती हैं जिनका इस्तेमाल पाठों में संदर्भ के रूप में किया जा सकता है। इनसे चर्चा या प्रयोग के लिए बिन्दु प्राप्त हो सकते हैं जैसे वर्गीकरण अथवा सजीव–निर्जीव वस्तुओं से सम्बन्धित गतिविधियां। बस की समय सारणियों या विज्ञापनों जैसे संसाधन भी आसानी से उपलब्ध हो सकते हैं जो आपके स्थानीय समुदाय के लिए प्रासंगिक हो सकते हैं – इन्हें शब्दों को पहचानने, गुणों की तुलना करने या यात्रा के समयों की गणना करने के कार्य निर्धारित करके शिक्षा के संसाधनों में बदला जा सकता है।

यद्यपि बाहर की वस्तुओं को कक्षा में लाया जा सकता है – फिर भी बाहर का पर्यावरण भी आपकी कक्षा का विस्तार-क्षेत्र हो सकता है। आम तौर पर सभी विद्यार्थियों के लिए चलने-फिरने और अधिक आसानी से देखने के लिए बाहर अधिक जगह होती है। जब आप अपनी कक्षा को शिक्षण के लिए बाहर ले जाते हैं, तब वे निम्न प्रकार की गतिविधियाँ कर सकते हैं:

- दूरियों का अनुमान लगाना और उन्हें मापना
- प्रदर्शित करना कि किसी वृत्त पर स्थित हर बिंदु केंद्रीय बिंदु से समान दूरी पर होता है
- दिन के भिन्न समयों पर परछाइयों की लंबाई रिकार्ड करना
- संकेतों और निर्देशों को पढ़ना
- साक्षात्कार और सर्वेक्षण करना
- सौर पैनलों की खोज करना
- फसल की वृद्धि और वर्षा की निगरानी करना।

बाहर, उनकी शिक्षा वास्तविकताओं और उनके अपने अनुभवों पर आधारित होती है, और अन्य संदर्भों तक भी सरलता से स्थानांतरित की जा सकती है।

यदि आपके बाहर के काम में स्कूल के परिसर को छोड़ना शामिल हो तो, जाने से पहले आपको स्कूल के मुख्याध्यापक की अनुमति लेनी चाहिए निर्धारित कर लेना चाहिए, सुरक्षा सुनिश्चित कर लेनी चाहिए और विद्यार्थियों को नियम स्पष्ट कर देने चाहिए। रवाना होने से पहले आप और आपके विद्यार्थियों को स्पष्ट होना चाहिए कि क्या सीखा जाना है।

संसाधनों का अनुकूलन करना

आप चाहें तो मौजूदा संसाधनों को अपने विद्यार्थियों के लिए अधिक अनुकूल बनाने हेतु प्रयास कर सकते हैं। ये परिवर्तन छोटे होकर भी बड़ा अंतर ला सकते हैं, विशेष तौर पर यदि आप अधिगम को कक्षा के सभी विद्यार्थियों के लिए प्रासंगिक बनाने का प्रयास कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, आप जगह और लोगों के नाम बदल सकते हैं यदि वे किसी अन्य प्रदेश से संबंधित हों, या गीत में किसी व्यक्ति का लिंग बदल सकते हैं, या किसी अलग तरह की योग्यता रखने वाले (differently abled) बच्चे को कहानी में शामिल कर सकते हैं। इस तरह से आप संसाधनों को अधिक समावेशी बनाते हुए अपनी कक्षा और शिक्षण-प्रक्रिया के उपयुक्त बना सकते हैं।

संसाधनयुक्त होने के लिए अपने सहकर्मियों के साथ काम करने से, संसाधनों के निर्माण और अनुकूलन के लिए आपके अपने बीच विविध कौशल उपलब्ध होंगे। एक सहकर्मी के पास संगीत, जबकि दूसरे के पास कठपुतलियाँ बनाने या कक्षा के बाहर के विज्ञान को नियोजित करने के कौशल हो सकते हैं। आप अपनी कक्षा में जिन संसाधनों को उपयोग करते हैं उन्हें अपने सहकर्मियों के साथ साझा कर सकते हैं । इससे आपके स्कूल के सभी क्षेत्रों में एक समृद्ध शैक्षिक वातावरण तैयार करने में सहायता मिलेगी।

अतिरिक्त संसाधन

- NCERT's Department of Education in Languages (look under 'Activities' and 'Publications', in particular): http://www.ncert.nic.in/departments/nie/del/index_dl.html
- Room to Read, India: http://www.roomtoread.org/india
- TeachingEnglish Radio India: http://www.britishcouncil.in/teach/teachingenglish-radio-india

संदर्भ/संदर्भग्रंथ सूची

Austin, R. (ed.) (2009) *Letting the Outside In*. London: Trentham Books.

Bridges, L. (1995) *Creating Your Classroom Community*. Portland, ME: Stenhouse Publishers.

Department for Education and Skills (2006) *Learning Outside the Classroom: Manifesto*. London: DfES Publications. Available from: http://www.lotc.org.uk/wp-content/uploads/2011/03/G1.-LOtC-Manifesto.pdf (accessed 28 October 2014).

Gregory, M. (undated) 'Creating a classroom library' (online), Reading Rockets. Available from : http://www.readingrockets.org/article/creating-classroom-library (accessed 28 October 2014).

National Curriculum Framework 2005 – A Study Guide (2006) 'Position papers by focus: NCF 2005' (online). Available from: http://ncf2005.blogspot.co.uk/2009/07/position-papers-by-focus-groups-ncf.html (accessed 28 October 2014).

Webster, L. and Reed, S. (2012) *The Creative Classroom*. London: Collins.

अभिस्वीकृतियाँ

तृतीय पक्षों की सामग्रियों और अन्यथा कथित को छोड़कर, यह सामग्री क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन-शेयरएलाइक लाइसेंस के अंतर्गत उपलब्ध कराई गई है (http://creativecommons.org/licenses/by-sa/3.0/)। नीचे दी गई सामग्री मालिकाना हक की है तथा इस परियोजना के लिए लाइसेंस के अंतर्गत ही उपयोग की गई है, तथा इसका Creative Commons लाइसेंस से कोई वास्ता नहीं है। इसका अर्थ यह है कि इस सामग्री का उपयोग अननुकूलित रूप से केवल TESS-India परियोजना के भीतर किया जा सकता है और किसी भी बाद के OER संस्करणों में नहीं। इसमें TESS-India, OU और UKAID लोगो का उपयोग भी शामिल है।

इस यूनिट में सामग्री को पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति के लिए निम्न स्रोतों का कृतज्ञतापूर्ण आभार:

चित्र 1: http://www.scillytoday.com/2012/08/09/islanders-return-from-doe-trip-to-india/india-street-scene/ (Figure 1: http://www.scillytoday.com/2012/08/09/islanders-return-from-doe-trip-to-india/india-street-scene/)

चित्र 4: https://www.flickr.com/photos/jordibernabeu/15155376815/ (Figure 4: https://www.flickr.com/photos/jordibernabeu/15155376815/)

कॉपीराइट के स्वामियों से संपर्क करने का हर प्रयास किया गया है। यदि किसी को अनजाने में अनदेखा कर दिया गया है, तो पहला अवसर मिलते ही प्रकाशकों को आवश्यक व्यवस्थाएं करने में हर्ष होगा।

वीडियो (वीडियो स्टिल्स सहित): भारत भर के उन अध्यापक शिक्षकों, मुख्याध्यापकों, अध्यापकों और विद्यार्थियों के प्रति आभार प्रकट किया जाता है जिन्होंने उत्पादनों में दि ओपन यूनिवर्सिटी के साथ काम किया है।